P.G.
SEM-II
Paper-9

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

प्रश्न- 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास के आधार पर बाणभट्ट का चरित्र चित्रण करें।

उत्तर- द्विवेदी जी के उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के सर्वाधिक महत्वपूर्ण पात्र बाणभट्ट का चरित्र उपन्यास के आदि से अंत तक के कथानक से सम्बद्ध है। लेखक ने पूरे उपन्यास को उसकी आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत करते हुए हीं यह स्पष्ट कर दिया है कि बाणभट्ट न केवल उपन्यास का नायक है वरन कथा का सर्वप्रधान पात्र भी है। वात्स्यायन वंश में उत्पन्न उद्भट पण्डित होते हुए भी उसमें न तो जातीय संकीर्णता है और न दम्भ, इसके विपरीत वह मानवतावादी मूल्यों का प्रतिष्ठापक है और अतृप्त प्रेम का जो स्वरूप उसमें परिलक्षित होता है, वह उसके उच्च नैतिक एवं चारित्रिक स्वरूप का दर्शन कराता है।

(1) आत्मस्वीकृति :- बाणभट्ट का असली नाम दक्षभट्ट था। बचपन की परिस्थितियों ने उसे आवारा, गप्पी और अस्थिरचित्त तथा घुमक्कड़ बना दिया था। गाँव से भागने के कारण उसे 'बण्ड' कहा जाने लगा जिसे बाद में उसने संस्कृत शब्द 'बाण' से संस्कार करके अपने नाम के साथ जोड़ दिया। अपने चरित्र की विविधताओं का बखान करते हुए वह स्वयं कहता है - "अवारा तो मैं था हीं इस नगर से उस नगर, इस जनपद से उस जनपद में, बरसों मारा मारा फिरता रहा, इस भटकन में मैंने कौन सा कर्म नहीं किया। कभी नट बनता, कभी पुतलियों का नाच दिखाता, कभी नाट्यमंडली संगठित करता और कभी पुराण-वाचक बनकर जनपदों को धोखा देता रहा - सारांश कोई कर्म छोड़ा नहीं।

(2) शिष्ट एवं मधुरभाषी : बाणभट्ट अपनी विद्वता के अनुसार हीं सुसंस्कृत, सभ्य, शिष्ट और मधुरभाषी है। अपने कुलीनता का निर्वाह उसने सर्वत्र किया है। यद्यपि वह आत्म तिरस्कार नहीं ~~[illegible]~~ कर पाता किन्तु इसके

लिए अपनी शिष्टता को कभी श्रद्धांजलि नहीं देता। कथा के प्रारंभ में ही अघोरभैरव से साक्षात्कार होने पर जैसा तैसा व्यक्ति होता तो अघोरभैरव की कड़वी बातों से सुनकर बौखला उठता किन्तु बाण अपने मधुरभाषण और शिष्टता का परित्याग नहीं करता।

(3) स्वाभिमानी :- बाण मधुरभाषी एवं शिष्ट है किन्तु अपने कुल एवं अपनी विद्या का गर्व भी उसे है। उसमें स्वाभिमान है इसकी रक्षा के लिए वह किसी भी प्रकार की आपदा को सहने को तत्पर है। कुमार कृष्णवर्द्धन और बाणभट्ट जब पहली बार मिले थे तब दोनों में तकरार हो गयी।

(4) सत्यभाषी :- बाणभट्ट का चरित्र ऊँचा भी है और अपेक्षाकृत कुछ मिलनसार भी। लेखक ने सर्वत्र उसके महान चरित्र को दर्शाया है और भट्टिनी निपुणिका या अन्य पात्र भी उसे देवतुल्य ही मानते है किंतु बाण जब अपनी पूर्वकथा से पाठकों को परिचित कराता है तब स्वयं को घुमक्कड़, धोखेबाज एवं पुराणवाचक आदि कहकर अपनी सत्यवादिता का ही परिचय देता है।

(5) उच्च मानवीयता :- बाण के हृदय में मानवतावादी मूल्यों के प्रति अगाध आस्था थी। अपनी उच्च मानवीयता के कारण वह दूसरों के लिए सदैव अपने प्राणों को संकट में डालने से भी नहीं हिचकिचाया था। भट्टिनी के उद्धार का प्रसंग इसका ज्वलंत उदाहरण है। वह भट्टिनी को नहीं जानता था पर जब निपुणिका उसे एक नारी के उद्धार करने की बात करती है तो वह तुरंत सहमत हो जाता है। उस समय वह अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु कुमार कृष्णवर्द्धन से मिलने जा रहा था किन्तु

विपत्ति में फँसे हुए नारी की सूचना पाकर वह निश्चय करता है कि पहले वह उस दुःखिनी का उद्धार करेगा बाद में कोई अन्य कार्य करेगा।

(6) अति भावुक :- मानवतावादी एवं सहृदय होने के कारण बाणभट्ट स्वभावतः अत्यधिक भावुक है। किन्तु उसकी भावुकता उच्च आदर्श प्रस्तुत करती है। ऐसा व्यक्ति अक्सर विपरीत परिस्थितियों में घबरा उठता है। एक ओर निपुणिका उसकी नाट्यमंडली छोड़कर चले जाने से वह दु:खी एवं अधीर हो मण्डली ही तोड़ देता है और उसे ढूँढने निकल पड़ता है। स्थाण्वीश्वर में मिलते ही निपुणिका के कहने पर वह भावुकतावश ही भट्टिनी का उद्धार करने का व्रत ले लेता है। इस प्रकार इस उपन्यास में ऐसे कई प्रसंग आए हैं जहाँ बाण अत्यंत भावुक दिख पड़ता है।

(7) प्रतिभासम्पन्न कवि - बाणभट्ट यद्यपि स्वयं को सर्वत्र बण्ड और भाग्यहीन ही मानता है किन्तु वास्तव में वह एक प्रतिभासम्पन्न कवि है। अपने कवि से वह स्वयं उतना परिचित नहीं है, किन्तु अन्य लोग जानते थे कि वह जैसा विद्वान था वैसा ही कुशल कवि भी। उसके वचनों में ही काव्य के दर्शन होते हैं और उसका उच्चारण भी कवित्वमय है। भट्टिनी तो उसके सामने खुलकर कह देती है कि वह इस युग का द्वितीय कालिदास है।

(8) नारी के प्रति सम्मान भावना - सरल सहृदय बाण के मन में नारी के लिए अत्यधिक सम्मान का भाव है। वह नारी को देवमन्दिर समझता था। इतना ही नहीं वह चाहता है कि यदि उसका कवित्व स्थाप दे तो वह नारी को काव्य द्वारा इतना प्रतिष्ठित करना चाहता है कि युगों युगों तक उसकी पूजा मानव समाज करता रहे। उसकी दृष्टि में राज्य संगठन, सैन्य संचालन, श्रृंखलाहीन महत्त्वाकाँक्षा के परिणाम हैं। इसको

नियंत्रित कर सकने की एक मात्र शक्ति नारी है। इतिहास साक्षी है कि इस महिमामयी शक्ति की उपेक्षा करनेवाले साम्राज्य नष्ट हो गए हैं, मठ विध्वस्त हो गए हैं। ज्ञान और वैराग्य के जंजाल फेनबुदबुद की भाँति क्षण भर में विलुप्त हो गए।"

(9) अद्भुत प्रेम :— बाण को हम एक ऐसे प्रेमी के रूप में पाते हैं जिसके प्रेम में एक अनोखापन है। वह निपुणिका से भी प्रेम करता है और महिनी से भी किन्तु आश्चर्य तो यह है कि उसने प्रेम को उसकी महानता तक स्थापित कर दिया था। वास्तव में वह तो मानव मात्र का प्रेमी है। मांसलता और वासना के लिए उसके जीवन में कोई स्थान नहीं था। निपुणिका उससे वासनात्मक प्रेम करती है पर बाण निपुणिका से सहानुभूतिजन्य प्रेम करता है। निपुणिका के शरीर को पा लेने की ललक उसमें न होकर उसके सम्मान को बनाए रखने की ललक उसमें थी। इसप्रकार महिनी के प्रति भी जो प्रेम उसमें है वह भी शारीरिक न होकर उच्च भावनात्मक है। वह महिनी की गरिमा को जानता है और उसके प्रति श्रद्धा और भक्तिपरक प्रेम भावना रखता है। यही कारण है कि हर जगह उसका प्रेम पूर्णतः अतृप्त रहा है। वह तृप्त तो हो ही नहीं पाया क्योंकि उसके प्रेम का संबंध शरीर से नहीं था।

अंततः बाणभट्ट के चरित्र का सम्यक मूल्यांकन करने के उपरान्त निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वह उच्च मानवीय गुणसम्पन्न एक आदर्श चरित्र है। इसमें विद्वता भी है और कवि सुलभ सहृदयता भी, शिल्पाचार है तो विपरीत परिस्थितियों से जूझने की क्षमता एवं साहस भी। उसका प्रेम भी इसलिये उच्च आदर्श प्रस्तुत करता है। दैहिक सुख से दूर श्रद्धा, सहानुभूति और सहसम्मान ने उसके प्रेम को अलौकिक स्तर प्रदान कर दिया है।